Jansatta, New Delhi - 8-2-89

एक नया हारमोनियम है 'संवादिनी'

हिंदुस्तानी संगीत जगत में हारमोनियम हमेशा से विवादास्पद वाद्य रहा। विदेशी की-बोर्ड और पाश्चात्यसप्तक (टेंपर्ड स्केल) वाले इस वाद्य को **रवींद्रनाथ ठाकुर** ने 'भारतीय संगीत के सत्यानाश' की संज्ञा दी तो जवाहर लाल नेहरू ने इसे **'दोगला'** तक कहा। अपनी सारी लोकप्रियता के बावजूद तीसरे दशक में यह वाद्य अपने जबर्दस्त विरोध के कारण आकाश वाणी पर एकल या संगीत वाद्य के रूप मे बंद ही कर दिया गया था।

इसके खिलाफ सबसे कड़ा तर्क यह था कि अपने पाश्चात्य ध्वन्यात्मक स्वरूप और चरित्र के कारण यह भारतीय संगीत के अनुकूल ही नहीं है। इसके समर्थकों ने दलील दी कि जिस तरह वायलिन विदेशी वाद्य होते हुए भी कर्नाटक संगीत में स्वीकार कर लिया गया है उसी तरह हारमोनियम हिंदुस्तानी पद्धति में संगीत के काम तो आ ही सकता है। लिहाजा बरसों के जद्दोजहद के बाद सन ७६ में यह फिर से आकाशवाणी में प्रवेश पा सका। पर

सचमुच ही इसकी सीमाएं संकुचित हैं। न इसमें गमक निकल सकती है न मींड़। तंत्रवाद्यों की तरह इसके स्वरों में तारतम्य नहीं बना रहता बल्कि एक-एक सुर खड़े ही लगते हैं। माथी (हवा) का दबाव भी इच्छानुसार नियंत्रित नहीं हो पाता है।

महाराष्ट्र के **पं. मनोहर चिमोटे** ने इन सब कमियों को दूर करके हारमोनियम को एक नया ही रूप दे डाला है। संवाद पद्धति पर आधारित भारतीय संगीत के लिए सर्वथा उपयुक्त अपने परिष्कृत वाद्य को उन्होंने 'संवादिनी' नाम दिया है। चिमोटे की मौलिक सूझबूझ, अनवरत प्रयास और शिल्प चातुर्य ने मिलकर इस नए वाद्य का सृजन किया है। हारमोनियम का स्टैंडर्ड 'की-बोर्ड' बदलने के अलावा उन्होंने पाश्चात्य टेंपर्ड स्केल को गांधार प्रधान राग संगीत वाला सप्तक बना डाला है। सुरों की चाबियों के पास लगे तरब जैसे तार उसमें तंत्रवाद्यों वाला अनुरणनात्मक प्रभाव पैदा करते हैं। और शक्तिशाली भाथ (बेलो) गूंजते स्वरों जैसी असंभव कल्पना भी संवादिनी में साकार होती है।

पं. चिमोटे बताते हैं कि भारतीय संगीत में स्वस्थापना संवाद पद्धति पर आधारित है और इस संवाद की दूरी मापने का काम 'श्रुति' करती है। जैसे षडज से ऋषभ के बीच चार श्रुति हैं तो ऋषभ से गांधार के बीच तीन इत्यादि।

इसीलिए साधारणतया हारमोनियम में प्राप्त 'स्टैंडर्ड स्केल' भारतीय संगीत के लिए कैसुए ही रहता है। वस्तुतः हारमोनियम में ट्यूनिंग कभी भारतीय नहीं रही। पं. चिमोटे की 'संवादिनी' में षडज मध्यम, षड्ज-पंचम के अलावा अंतर गांधार तक उपलब्ध है जो कि सितार या तानपुरे का तार छेड़ने पर नेपथ्य में सुनाई देता है। 'संवादिनी' में भी अंतर गांधार उसी तरह गूंजता है।

इसका रहस्य समझने के लिए संवादिनी के स्वरूप का खुलासा जरूरी है। पं. चिमोटे ने सबसे पहला परिष्कार किया इस वाद्य की 'आस' बढ़ा कर। आम हारमोनियम की भाथी छेड़ने पर सुरों का तारतम्य एक निश्चित अवधि तक ही बना रह पाता है। उस शक्ति को बढ़ा कर संवादिनी में स्वर की 'आस' बहुत लंबी हो सकी। इसका राज है तरब के तारों की तरह लगे तार। उन तारों की वजह से 'गूंज' और 'संवाद संबंध' दोनों ही बखूबी मिल सके।

पं. चिमोटे कहते हैं जिस तरह हमारा व्यक्तित्व एक होते हुए भी परिस्थिति वश 'रिएक्ट' होता रहता है, बदलता रहता है उसी तरह सुरों का स्वभाव है। मारवा के कोमल ऋषभ का मिजाज दूसरा होता है और पूरिया के कोमल ऋषभ का दूसरा। हमारे संगीत का चरित्र विदेशी हारमोनियम के बस का है ही नहीं।

पं. मनोहर चिमोटे मूलरूप से एक गायक कलाकार हैं। अमीर खां से तालीम लेने के अलावा पं. लक्ष्मण प्रसाद जयपुर वाले के साथ पं. चिमोटे ग्यारह साल रहे। पर इस साज की शिक्षा पं. भीष्म देव वेदी से मिली। नागपुर में संगीत प्रेमी परिवार में १९२९ में जन्मे मनोहर वासुदेव चिमोटे छह वर्ष की उम्र से ही अपने पिता का ठुमके भजन गायन में साथ देने लगे थे। पं. भीष्म देव वेदी से मिलने पर उनकी रुचि हारमोनियम में रम गई।

सन पचास में बंबई जाने के बाद उन्होंने पं. लक्ष्मण प्रसाद जयपुर वाले, नजाकत सलामत अली, बड़े गुलाम अली खां और पं. भीम सेन जोशी जैसे कलाकारों की संगति भी की। लेकिन उन्हें लगा कि हारमोनियम में भी सितार, सरोद, बांसुरी इत्यादि की तरह एकल वादन की संभावनाएं हैं। तभी से वह इस वाद्य पर अपने शोध में जुट गए। बरसों के प्रयोग परक अनुसंधान के बाद उन्होंने 'संवादिनी' का सृजन किया।

मनोहर चिमोटे 'संवादिनी' के साथ

उनके एकल वादन का कार्यक्रम सुनना एक रोमांचक और सौंदर्यबोध भरा अनुभव है। गायकी अंग की पूरी छवि संवादिनी में वह ज्यों की त्यों पेश करते हैं। खटके, मुर्की, जमजमे से लेकर मींड और गमक तक सहज ही अदा करने वाला यह वाद्य सुनने में कभी क्लारिनेट जैसा लगता है तो कभी सारंगी जैसा। सच तो यह है कि इसका ध्वन्यात्मक स्वरूप अनूठा है।

पं. चिमोटे ने जोगतिलंग, वृंदावनी मल्हार जैसे रागों का भी निर्माण किया है जिसके पूर्वांग में मल्हार है तो उत्तरांग में वृंदावनी। चिमोटे कहते हैं कि भारतीय संगीत के स्वरों में संगतता ही नहीं प्रसन्नता है, शक्ति है। वह 'संवादिनी' के एकल प्रदर्शन के लिए शैली निर्माण पर भी बल देते हैं। उनका कहना है कि नाट्य संगीत या रवींद्र संगीत बजाने में बात प्रादेशिक रह जाती है। अखिल भारतीय स्तर पर एकल प्रदर्शन के लिए शास्त्रीय संगीत ही मुनासिब होगा और वही हर एक को प्रभावित भी करेगा। संवादिनी की असली असफलता होगी दरबारी का गांभीर्य पैदा करना न कि नाट्य संगीत, रवींद्र संगीत या फिल्म संगीत।

● मंजरी सिन्हा